Gyanvividha [A Peer Reviewed and Refereed Journal] March 2024 : Year-1, Vol-2 : PP-47-52

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)47-52
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. कोमल कुमारी
हिन्दी-शिक्षिका,
रा॰म॰वि॰ बसुआड़ा, मधुबनी

Corresponding Author :
डॉ. कोमल कुमारी
हिन्दी-शिक्षिका,
रा॰म॰वि॰ बसुआड़ा, मधुबनी

समकालीन उपन्यासों में स्त्री मुक्ति के प्रश्न

महिलाओं के साथ एक बड़ी समस्या यह है कि जब भी वो अपने दम पर, अपने बुद्धि-विवेक के साथ आगे कदम बढ़ाती हैं तो उनका पूरा ध्यान पीछे की ओर लगा रहता है। घर-परिवार के लोग बुरा न मान जायें, पड़ोसी बातें न बनाने लगें, रिश्तेदार मजाक न बना दें और न जाने क्या-क्या? महिलाओं के मन में यह भावना रहती है कि वो कोई भी नया काम करे तो घर-परिवार के लोग साथ दे, प्रशंसा करें, शाबाशी दें। लेकिन होता उसका उलटा है। समाज में कोई भी व्यक्ति यदि आगे बढ़ना चाहता है (चाहे महिला हो या पुरुष) एक-दो लोग ही सहयोगी बनकर साथ देते हैं, बाकी दुनिया टांगें खीचने में ही लगी रहती हैं। पुरुषों को तो विरोध सहकर, परिवार-समाज से अड़कर आगे बढ़ने की आरंभ से ही आदत होती है। लेकिन इस पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को बचपन से ही आज्ञाकारी बनाया जाता है। इसलिए लीक तोड़कर चलने में महिलाएँ घबराती हैं।

आज के दौर में स्त्रियों को हर प्रकार की कुप्रथाओं एवं कुरीतियों से मुक्त करने हेतु आन्दोलन चल रहा है। वर्त्तमान काल में आवश्यक है कि स्त्रियाँ अपने लिए ठोस फैसला लें और बेखौफ आगे बढ़े। सही फैसला हुआ तो तरक्की मिलेगी और गलत हुआ तो तर्जुबा। अपनी गलतियों से सीखकर ही तो हम जीवन में आगे बढ़ते हैं। स्त्रियों का ढुलमुल रवैया न केवल उनके आत्मविश्वास को हिला देता है अपितु सामने वाले को ताने देने का मौका भी प्रदान कर देता है। जो व्यक्ति हमसे अधिक ज्ञानी, चरित्रवान, संस्कारी व सफल होगा वो हमारी खिंचाई करने या हमें ताना देने कभी नहीं आयेगा। अर्थात् हमें ताना देने वाले और हमारी टांगें खीचनें

वाले लोग वही होते हैं जो हमसे बहुत पीछे हैं, खाली बैठे हुए हैं। ऐसे टांगे खीचनें वाले लोग जो पहले से ही हमारे कदमों में पड़े हैं उनपर तरस खाकर हमें आगे बढ़ जाना चाहिए।

हाँ, ये बात सच है कि स्त्रियों को मुक्ति दिलाने हेतु आसमान से तो कोई फरिस्ता आने वाला नहीं है। स्त्री को अपनी मुक्ति के लिए स्वयं संघर्ष करना होगा, तपना होगा, लड़ना होगा, जूझना होगा और मजबूत बनना होगा। जब तक स्त्री अबला होगी उसकी मुक्ति नहीं होगी, जिस दिन से वो दुर्गा, काली का रूप लेकर सबला बन जायेगी, पूरी दुनिया उसका लोहा मानेगा। वह समाज के मुख्य धारा में अर्थात् पुरुषों की बराबरी में आ जायेगी। उसी दिन से स्त्रियों के मुक्ति की कथा आरंभ हो जायेगी। समकालीन उपन्यासों में स्त्री मुक्ति से जुड़ी कथाएँ स्त्रियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, संघर्ष करने के लिए मजबूती प्रदान करती है। स्त्रियों की मुक्ति, अर्थात् आधी आबादी की मुक्ति और आधी आबादी की मुक्ति का अर्थ है पूरे समाज में संतुलन!

हिन्दी साहित्य जगत में उपन्यासों के विकास क्रम का यदि ध्यानपूर्वक अवलोकन किया जाए तो हम पाते हैं कि बहुत ही सीमित अवधि में यह विधा काफी विकसित हो गई। यह बात सत्य है कि हम अभी विश्व के श्रेष्ठ उपन्यासों के स्तर से बहुत दूर हैं। लेकिन नई पीढ़ी के हिन्दी उपन्यासकारों की सफलताओं को देखते हुए मन में एक सकारात्मक उल्लास आ जाता है। हिन्दी साहित्य जगत में उपन्यासों की कथा भूमि आज काफी विस्तृत और वैविध्यपूर्ण हो गई है। आज संवेदनात्मक स्तर पर भी हिन्दी उपन्यास लोक जीवन के अनेक अपरिचित स्तरों को प्रस्तुत कर रहा है। आंचलिक जीवन के अनेक प्रसंगों, महानगरीय जीवन के अनेक प्रसंगों, ग्रामीण जीवन के संघर्षों, निम्न मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं, पिछड़ी जातियों की दुर्दशा व सामाजिक उपेक्षा, अवरोधों और टूटते बनते रिश्तों, स्त्री जीवन की यातनाओं व त्रासदियों और उनकी मुक्ति के प्रश्न तथा ऐतिहासिक-पौराणिक जीवन की पुनर्व्याख्याओं से समृद्ध होता हुआ, हिन्दी उपन्यास संभावनाओं के नये क्षितिज का द्वार मुक्त कर रहा है।

हिन्दी उपन्यासों के इतिहास में सन् 1960 ई० के बाद समकालीन उपन्यासों का दौर आया। समकालीन का अर्थ समय के वैचारिक और रचनात्मक दवाबों को झेलते हुए, उनसे उत्पन्न तनावों और टकराहटों के बीच अपनी सृजनशीलता द्वारा अपने होने को प्रमाणित करना है। समकालीन उपन्यासकार अपने समय के महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर किस प्रकार प्रतिक्रिया करता है और अपने लेखन में उन्हें कितनी गंभीरता से अभिव्यक्त करता है इससे ही उनकी समकालीनता सुनिश्चित होती है। समकालीन उपन्यासकारों में धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, प्रभाकर माचवे, श्रीकान्त वर्मा, महीप सिंह, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, नरेश मेहता, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, ठाकुर प्रसाद सिंह, अरुण प्रकाश, श्रीलाल शुक्ल, श्रीकान्त वर्मा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मृणाल पाण्डेय आदि अनेक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं। समकालीन उपन्यासकारों में 'स्त्री मुक्ति के प्रश्न' एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा रहा है। मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन के अन्तर्विरोधों और पुरुष प्रधान समाज में अपनी पहचान के लिए संघर्षरत स्त्री अपने जीवन में मुक्ति पाने के लिए छटपटाती हुई नजर आती हैं। यहाँ हम प्रख्यात कथाकार श्री अरुण प्रकाश के उपन्यास 'कोंपल-कथा' और महान महिला कथाकार श्रीमती मन्नू भंडारी जी के उपन्यास 'आपका बंटी' का विश्लेषण करेंगे। यहाँ इन दोनों उपन्यासो के स्त्री पात्रों की व्याकुलता, छटपटाहट और उनसे मुक्ति पाने की बेचैनी का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है।

कोंपल-कथाः कोंपल कथा में अरुण प्रकाश ने औरतों पर होते अत्याचारों का बहुत ही करुण व मार्मिक चित्रण किया है। जमींदार, खानदानी व प्रतिष्ठित हरिपरसाद बाबू अपनी जवानी के दिनों में बड़े ही रंगीन मिजाज थे। विवाह किया, चार बच्चे हुए, फिर पत्नी की उपयोगिता समाप्त हो गई। पत्नी का कार्य अब घर के अन्दर रहकर गृहस्थी संभालना और बच्चों की परवरिश करना रह गया। लेकिन हरिपरसाद के कार्य सूचियों में रंगरेलियाँ मनाना, कमसिन बालाओं के साथ प्रेम प्रसंग करना, चतुरी भाट से अपनी प्रशंसा में कवित्त सुनना, नर्तकी हुस्ना का ठुमरी देखना जैसे अनेक कार्य थे। उनका सारा समय इन सब में ही बीतता। हद तो तब हो गयी जब एक नाचने वाली के प्रेम में हरिपरसाद इतने पागल हो गये कि उस वेश्या हुस्ना को हवेली में ही लाकर रख लिये। अपनी पत्नी के दुख का

तनिक भी विचार नहीं किया। घर में कोहराम मच गया। पत्नी ने अन्न-जल त्याग दिया, माँ रूठकर मायके चली गई। आँखों के सामने हो रहे कुकृत्य बर्दाश्त से बाहर हो गया तब पत्नी ने जहर खाकर प्राण त्याग दिये।

हरिपरसाद बाबू की छोटी बेटी ज्ञान भी बहुत संस्कारी और विचारशील है। माँ के अभाव में पूरी गृहस्थी का बोझ उसी के कंधे पर है। ज्ञान अब तीस वर्ष की हो गई है। उसके विवाह की उम्र निकली जा रही है लेकिन धन के अभाव में अच्छा लड़का नहीं मिल रहा है। वह जमींदार परिवार की बेटी है लेकिन दिन-रात नौकरों की तरह खटती रहती, छोटा भाई उसे बात-बेबात डाँटता रहता और भाभी ताने देती रहती है। विवाह में हो रही देरी के कारण गाँव के लोग तरह-तरह के अफवाह फैला रहे हैं। ज्ञान सुन्दर, पढ़ी-लिखी और समझदार लड़की है, लेकिन यहाँ कोई उसकी योग्यता का कद्र करने वाला नहीं है। घर और बाहर दोनों जगहों का अपमान झेलकर भी चुप रहती या फिर अपने कमरे में घंटों रोती रहती। इस घर में उसका दुःख सुख सुनने वाला भी कोई नहीं है। माँ गुजर चुकी है, दादी को पागलपन का दौरा समय-समय पर पड़ता रहता है और भाभी तो जले पर नमक छिड़कने वाली है। एक मात्र उसकी हमदर्द, बड़ी बहन विभा है जो अपने विवाह के पश्चात् कभी मायके नहीं आ सकी है।

दुःख में अकेली पड़ी ज्ञान अपनी बड़ी बहन को चिट्ठी लिखकर अपना दर्द कुछ इस प्रकार बयाँ करती है- “दीदी हरदम यही लगता है कि मैं लड़की नहीं, लाश हूँ जो सड़ रही हूँ और इस लाश को उठाकर चिता पर जलाने को कोई तैयार नहीं है। .....पास-पड़ोस की औरतें चुगली खाती रहती है- ज्ञान तो तीन बार पेट गिरा चुकी ......बाप उसकी शादी क्यों करेगा?

......ज्ञान का खेत जोतने के लिए बंधु हलवाहा है ही .....तुमसे ज्यादा मेरे बारे में कोई नहीं जानता। मर्द कैसा होता है, मैंने जाना नहीं। दूर से ही देखा है- सपने की तरह। दादी कहती है- कोई राजकुमार आयेगा, तुझे ब्याह ले जायेगा। क्या राजकुमार इतना गरीब होता है कि वह मुझसे पैसे लेगा तभी ब्याह करेगा।”[1]

ज्ञान की बड़ी बहन विभा का तो उससे भी बुरा हाल है। विवाह के पश्चात दहेज के पूरे पैसे और एक मोटरसाईकिल न मिलने के कारण विभा के ससुराल वाले बहुत नाराज हैं। वे लोग विभा को हर वक्त प्रताड़ित करते रहते हैं ताकि उसके मायके वाले देर से ही सही दहेज के बचे हुए पैसे और मोटरसाइकिल दे दें। लेकिन पिता हरिपरसाद और भाई अशोक इतने कठोर हैं कि उसे उसके हाल पर छोड़कर निश्चिन्त हो गये हैं। किसी भी हाल में बकाया दहेज न मिलने की संभावना के कारण ससुराल के लोग विभा के मुँह से मायके का नाम तक नहीं सुनना चाहते हैं। प्रताड़ना व दुःख बर्दाशत करते-करते वह बीमार होकर सूखती जा रही है। ज्ञान के विवाह जैसे बड़े मौके पर भी उसे मायके जाने की इजाजत नहीं मिली। बेचारी सबकुछ अकेले बर्दाशत करने को विवश है और इन सबसे मुक्ति का एक मात्र साधन मृत्यु ही उसे नजर आ रही है। विभा अपने दुखों का वर्णन करते हुए ज्ञान को चिट्ठी में लिखती है- “बाबूजी को पूरा तिलक नहीं देना था तो किसी गरीब के यहाँ बैठा देते। कम से कम रोज ताना तो नहीं सुनना पड़ता। नैहर का नाम लेते ही पूरा घर भौंकने लगता है। मेरी बहना, औरत होना ही नरक है ..... बस एक दिन मेरे मरने की खबर सुन लोगी।”[2]

सतमहला इस्टेट के इस खानदानी परिवार की हर स्त्री पर अत्याचार हो रहा है। हरिपरसाद की बेवफाई से पत्नी ने आत्महत्या कर ली। बड़ी बेटी ससुराल में प्रताड़ित हो रही है दहेज के कारण और छोटी बेटी विवाह में हो रही देरी के कारण मायके में प्रताड़ित हो रही है दहेज के कारण ही। हरिपरसाद की बूढ़ी माँ घर की स्त्रियों की ऐसी दुर्दशा देखकर विछिप्त- सी हो गई है। जिस नाचने वाली के प्रेम में पड़कर हरिपरसाद ने पत्नी को धोखा दिया एक दिन वही हुस्ना किसी और के बिस्तर पर पायी गई। फिर क्या पुरुष तो स्त्री को उसी पल सजा देना धर्म समझते हैं। उन्होंने हुस्ना की हत्या कर दी।

यह सच है कि ‘कोंपल-कथा’ में सभी स्त्री पात्र प्रताड़ित हो रही हैं। लेकिन कथा नायिका ज्ञान अपनी विपत्तियों से लड़ते हुए एक सुनहले भविष्य का सपना देख रही है। लालची भाई उसका पकड़ौआ विवाह करवाता है लेकिन बाद में लड़का भूमिहार के बदले मल्लाह निकल जाता है। भाई-भाभी दूल्हे को डरा-धमका कर भगा देना चाहते हैं और ज्ञान को आजीवन मुफ्त की नौकरानी के रूप में

रखना चाहते हैं। लेकिन पढ़ी-लिखी व समझदार ज्ञान इस वक्त अपनी बहादूरी का परिचय देते हुए अपने विवाह को सफल करने हेतु अपने नये-नवेले भयभीत पति से बात करती है और आजीवन साथ निभाने का वादा करती है। अपने विवाह को सफल बनाने हेतु वह पूरी दुनियाँ से लड़ जाती है। ज्ञान अपने पति मदन से कहती है- "तुम बचना चाहते हो ......मैं विधवा की तरह धुल-धुलकर मर जाऊँ? छिः कितने स्वार्थी हो तुम! .....तुम किससे डरते हो? ये कायर लोग तुमको छू भी नहीं सकतें। मैं सबको देख लूँगी। मुझे मारकर ही कोई तुम्हें छू सकेगा।"[3]

'आपका बंटी'– उपन्यास का मुख्य पात्र बंटी तलाकशुदा दंपत्ति का नौ वर्षीय पुत्र है। यह किशोर बालक अपने सगे माता-पिता के साथ रहना चाहता है। लेकिन बचपन से ही वह अकेले अपनी मम्मी शकुन के साथ पला-बढ़ा है। मम्मी उसे दिलो जान से प्यार करती हैं और बंटी के लालन-पालन में किसी भी प्रकार का कसर नहीं छोड़ती है। शकुन बंटी की हर जरूरत व जिद् को पूरा करती। वह उससे ढेर सारी बातें करतीं, रोज बैठाकर पढ़ाती, दुनिया भर की ज्ञान की बातें बताती, बागवानी, चित्रकारी आदि कलाओं के लिए उसे हमेशा प्रोत्साहित करतीं। रात को सोने से पहले लंबी-लंबी, प्यारी-प्यारी व ज्ञानवर्धक कहानियाँ सुनाकर बड़े प्यार से बेटे को सुलाती। शकुन के ममतामयी छाँव में वह राजकुमार की तरह पल रहा है।

शकुन पढ़ी-लिखी, समझदार व आधुनिक विचारों वाली महिला है। वह कॉलेज की प्रिंसीपल है। घर व कॉलेज में अपने दायित्वों को निभाना बखूबी जानती है। वह अपने पहले पति अजय बत्रा के साथ रिश्ते निभाने की पूरी कोशिश करती है लेकिन उनके बीच का इगो उन्हें कभी भी आत्मीयता के साथ एक नहीं होने दिया है। अजय को सौ प्रतिशत समर्पित पत्नी चाहिए लेकिन शकुन पत्नी धर्म निभाने की खातिर स्वयं के व्यक्तित्व को किसी भी कीमत पर स्वाहा नहीं कर सकती है। इस संदर्भ में वकील चाचा भी यही कहते हैं- "तुम जानती हो, अजय बहुत इगोइस्ट भी है और बहुत पोजेसिव भी। अपने-आपको पूरी तरह समाप्त करके ही तुम उसे पा सको तो पा सको, अपने को बचाए रखकर तो इसे खोना ही पड़ेगा.....।"[4]

वैवाहिक जीवन के तनावपूर्ण रिश्ते से अलग होने के पश्चात वह अपनी जिंदगी को नये सिरे से शुरू करना चाहती है। शकुन अपनी बेरंग जिंदगी के अकेलेपन से बिल्कुल ऊब चुकी है, वह उससे अब मुक्ति पाना चाहती है। शकुन की मनःस्थिति के विषय में लेखिका मन्नू भंडारी लिखती हैं- "शकुन चक्की पीस-पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने-आपको स्वाहा कर देने वाली माँ नहीं थी, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से दिप्त माँ थी। इस नारी और माँ के आपसी द्वंद्व का अध्ययन ही शकुन को उसका वर्तमान रूप देता है।"[5]

शकुन एक सशक्त नारी है। उसे अपनी खुशियों की भी परवाह है। वो ईश्वर द्वारा प्राप्त अपने जीवन को यों ही नष्ट नहीं करना चाहती है। इसलिए वो अपनी योग्यता व प्रतिभा को दबाकर केवल गृहणी बनकर नहीं रह पाती है। वह अपना करियर बनाती है। अपनी पहली शादी में जब उसे घुँटन महसूस होती है तब उस बंधन को तोड़कर वह स्वयं को मुक्त करती है। तलाक के बाद भी जब उसके दुख व उदासी का अंत होता नजर नहीं आता तब वह अपने जीवन की फिर से नई शुरुआत करना चाहती है। वह अपने ही शहर के प्रतिष्ठित डॉक्टर, मिस्टर जोशी से दूसरा विवाह रचा लेती है। डॉ॰ जोशी की पहली पत्नी मर चुकी है और वे वर्तमान में सौतेली पुत्री जोत व सौतेले पुत्र अमि के साथ उनके विशाल बंगले में रहती हैं। वहीं उनके वर्तमान डॉक्टर पति का क्लिनिक भी है जहाँ वे अपने मरीजों को भी देखते हैं। डॉ॰ जोशी सरल स्वभाव के, सुलझे हुए इनसान है। वे शकुन से प्यार करने लगे हैं। शकुन को भी डॉ॰ जोशी का साथ अच्छा लगने लगा है और वह उनके साथ अपना पूरा जीवन बिताना चाहती है जो आनंद व सुख की अनुभूति शकुन अभी महसूस कर रही है, वो पहले विवाह में कभी नहीं किया। अब वह भावनात्मकरूप से सुरक्षित है तथा इस रिश्ते को पूरी ईमानदारी से निभाना चाहती है।

'आपका बंटी' की ही एक अन्य स्त्री पात्र फूफी है जो शकुन के अकेलेपन की साथी रही है। फूफी कहने को तो नौकरानी है

लेकिन शकुन जब अपने पहले पति से अलग होकर नन्हे से पुत्र बंटी के साथ रहती थी तब फूफी ने माँ की तरह ही शकुन व बंटी दोनों को संभाला। शकुन फूफी के भरोसे निश्चिन्त होकर कॉलेज चली जाती। फूफी बंटी व घर को अच्छी तरह संभालती। शकुन के पहले पति अजय बत्रा जब कभी बंटी से मिलने आते फूफी नाराज रहतीं, सीधे मुँह बात तक नहीं करतीं। बंटी व शकुन की उदास जिंदगी का कारण मानती हैं वो अजय को। लेकिन अब शकुन ने भी जब दूसरी शादी कर ली तो वह उससे भी उतनी ही नाराज है। नौकरानी होकर भी वह अपनी मालकिन के मुँह पर सच्चाई बोलने की हिम्मत रखती है। वह केवल बोलकर ही शान्त नहीं होती अपितु नौकरी छोड़कर हरिद्वार जाकर कीर्तन-भजन करने का निर्णय भी ले लेती है। फूफी के नजर में शकुन जब तक सही थी उसे बिटिया का सा प्यार दिया लेकिन जब वह दोषी हो गई तब धिक्कारते हुए कड़े शब्दों में कहती है- "जवानी यों ही अंधी होती है बहूजी, फिर बुढ़ापे में उठी हुई जवानी। महासत्यानाशी! साहब ने जो किया तो आपकी मट्टी-पलीद हुई और अब आप जो कर रही हैं इस बच्चे की मट्टी-पलीद होगी। चेहरा देखा है बच्चे का? कैसा निकल आया है, जैसे रात-दिन घुलता रहता हो भीतर!...... हमने कहा न बहुजी आप हमें हरिद्वार भिजवा दो...... बस!"[6]

शकुन ने महसूस किया है कि लोग उसके दूसरे विवाह से अप्रसन्न है। प्रिंसीपल का ओहदा होने के कारण सामने से लोग कुछ नहीं कहते लेकिन पीठ पीछे घुमा-फिराकर जरूर कहते हैं। कॉलेज के स्टाप हो या पड़ोसन टीटू की मम्मी, घूमा फिराकर हल्के-फुल्के व्यंग्य में नाराजगी जताकर चली जाती है। लेकिन शकुन ने जब आगे बढ़ने का फैसला कर लिया है तब वो इन बातों से विचलित नहीं होती है। वह मजबूती से परिस्थितियों का सामना करती है। माँ जैसा स्नेह देने वाली फूफी भी आज उसे भला-बुरा कहकर जा रही है। ऐसे नाजुक वक्त में भी शकुन पीड़ा से टूटने के बदले अपने निर्णय पर अटल रहती है। वह सख्त आवाज में फूफी से कहती है- "देखो फूफी, मैं तुम्हारी बहुत इज्जत करती हूँ। अपनी माँ से भी ज्यादा ....पर माँ को भी मैंने कभी अपनी बातों के बीच में नहीं बोलने दिया ......मुझे याद नहीं वे कभी बोली हों। ......यह अधिकार तो मैं किसी को दे ही नहीं सकती।"[7]

'कोंपल कथा' उपन्यास की स्त्री पात्र ज्ञान हो या फिर 'आपका बंटी' उपन्यास, की स्त्री पात्र शकुन दोनों के जीवन में समस्याएँ व संघर्ष पर्याप्त मात्रा में है। पकड़ौआ विवाह में गलत लड़के से ज्ञान का विवाह और फिर दूल्हे को भगाकर ज्ञान को आजीवन मुफ्त की नौकरानी बनाकर रखने की योजना। पढ़ी लिखी पर सीधी-सादी ज्ञान आज तक गौ की तरह सबकी बातें सुनती आई है और सबके आदेश को मानती आई है। लेकिन आज जब उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा फैसला घर वाले उसके खिलाफ में ले रहे हैं तब वह चुप नहीं रह पाती। गौ से शेरनी बन जाती है। अपने भविष्य को अंधकार में डूबने से बचाने हेतु वह लाज-शरम छोड़कर अपने पति को उसका पतिधर्म याद दिलाती है और माँ की तरह स्नेह देने वाली नौकरानी जौनावाली से अपने सुहाग की रक्षा हेतु गुहार लगाती है। ज्ञान मर-मिटने को तैयार है लेकिन अपने विवाह को किसी कीमत पर टूटने नहीं देगी। आज ज्ञान की यही दृढ़ता उसे वर्षों से झेल रही यातना से मुक्ति दिलाता है।

दूसरी तरफ शकुन भी अपने पहले विवाह को न निभा पाने का दोष स्वयं को नहीं देती है। वह भावुक होकर नहीं अपितु व्यावहारिक होकर तलाक लेती है और दूसरा विवाह कर लेती है। दूसरे विवाह में उसे हर वो सुख प्राप्त होता है जिसकी वो हकदार है। उसे वो प्यार, इज्जत व भावनात्मक सुरक्षा प्राप्त हो रही है जो प्रथम विवाह में नहीं मिला। आज वो अपने एकाकी जीवन के पिछले सात-आठ वर्षों के लिए पछता रही है। हलांकि शकुन के दूसरे विवाह से उसके आस-पास के लोग प्रसन्न नहीं है। फिर भी शकुन अपने फैसले पर कायम है और रिश्ते को कामयाब बनाने में लगी हुई है।

समकालीन उपन्यासों की स्त्री पात्र भावनात्मक स्तर पर जीते हुए लकीर की फकीर बनकर नहीं रहती हैं। वो वर्तमान में जीती हैं। समस्याओं में घिरकर भाग्य को कोसने के बदले उनसे मुक्ति पाने हेतु हर संभव वास्तविक व व्यवहारिक उपाय करके जीवन पथ पर आगे की ओर बढ़ती है। महिलाओं द्वारा किया गया यह प्रयास हमारे समाज में निश्चित रूप से एक सकारात्मक बदलाव ला रहा है।

संदर्भ सूची

1. ‘कोंपल-कथा’, अरुण प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008 पृ० सं-13
2. ‘कोंपल-कथा’, अरुण प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008 पृ० सं०-36
3. ‘कोंपल-कथा’, अरुण प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008 पृ० सं०-96
4. ‘आपका-बंटी’, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2021, पृ० सं०-84
5. ‘आपका-बंटी’, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2021 पृ० सं०-7
6. ‘आपका-बंटी’, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2021 पृ० सं०-88
7. ‘आपका-बंटी’, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2021 पृ० सं०-88